Faizan e Gareeb Nawaz (Hindi)

बयान

6 रजबुल मुरज्जब 1444 हि.

28 जनवरी 2023 ई.

हफ़्तावार रिसाला : 335

Weekly Booklet : 335

फ़ैज़ाने ग़रीब नवाज़ رحمۃ اللہ علیہ

सफ़हात 16

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **फ़ैज़ाने ग़रीब नवाज़**

सिने त़बाअ़त : जुमादल उख़्रा **1445** हि., दिसम्बर **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने ग़रीब नवाज़**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए Whatsapp, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (1)

दुआ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या अल्लाह पाक ! जो कोई 15 सफ़ह़ात का रिसाला : **''फ़ैज़ाने ग़रीब नवाज़''** पढ़ या सुन ले उस के ईमान की हि़फ़ाज़त कर और उस की मां बाप समेत बिग़ैर हि़साब मग़्फ़िरत फ़रमा ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **: अल्लाह** पाक की ख़ाति़र आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब आपस में मिलें और हाथ मिलाएं और नबी (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं । (مسند ابی یعلی،3/95،حدیث:2951)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

ज़ालिम बादशाह

कहा जाता है : एक बादशाह बड़ा ज़ालिम और बद मिज़ाज था, किसी शहर के अत़राफ़ में उस का एक ख़ूब सूरत बाग़ था, जिस में साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पानी का एक हौज़ भी था, एक **अल्लाह** वाले का वहां से गुज़र हुवा

---

(1)... ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सालाना छटी शरीफ़ (या'नी उ़र्स मुबारक) 6 रजबुल मुरज्जब 1444 हि. मुत़ाबिक़ 28 जनवरी 2023 ई. के मौक़अ़ पर मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में मदनी मुज़ाकरे से क़ब्ल अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का होने वाला बयान ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरी सूरत में शो'बा हफ़्तावार रिसाला की त़रफ़ से पेश किया जा रहा है ।

तो वोह उस बाग़ में तशरीफ़ ले गए और हौज़ के पानी से ग़ुस्ल फ़रमा कर नमाज़ अदा कर के वहीं बैठ कर तिलावते क़ुरआने करीम में मसरूफ़ हो गए कि इतने में बादशाह के आने का शोर बुलन्द हुवा, **अल्लाह** पाक का वोह नेक बन्दा इत्मीनान के साथ यादे ख़ुदा में मश्ग़ूल रहा, जब बादशाह अपनी शानो शौकत के साथ बाग़ में दाख़िल हुवा तो हौज़ के कनारे एक सादा सा लिबास पहने शख़्स को देख कर आग बगूला हो गया और अपने सिपाहियों पर ग़ज़बनाक हो कर बोला : इस शख़्स को किस ने मेरे बाग़ में बैठने की इजाज़त दी ? सिपाही सहमे हुए थे कि अचानक उस नेक हस्ती की नज़रे फ़ैज़ असर उस बादशाह पर पड़ी, बादशाह एक दम कांपने लगा और लरज़ता हुवा ज़मीन पर गिरा और बेहोश हो गया। **अल्लाह** पाक के उस नेक बन्दे ने पानी ले कर उस के मुंह पर छींटे मारे तो थोड़ी देर में उसे होश आ गया, होश में आते ही उस बादशाह ने निहायत आजिज़ी के साथ अपनी ग़लती की मुआफ़ी मांगी और फिर अपने तमाम ख़ादिमों समेत **अल्लाह** पाक के उस नेक बन्दे के हाथों पर तौबा कर के उन की ग़ुलामी में दाख़िल हो गया। (हिन्द के राजा, स. 74 मुलख़्ख़सन)

ऐ आशिक़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ! क्या आप जानते हैं येह नेक बख़्त, बा रो'ब, तिलावते क़ुरआने करीम करने वाली नेक सिफ़त हस्ती कौन थी ? येह कोई और नहीं, सिल्सिलए आलिया चिश्तिय्या के अज़ीम पेशवा ख़्वाजए ख़्वाजगां, सुल्तानुल हिन्द हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हसन सन्जरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه थे जो कि आगे चल कर हिन्दूस्तान के बेताज बादशाह बने।

ख़्वाजए हिन्द वोह दरबार है आ'ला तेरा कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 27)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

“ख़्वाजा” के मा’ना और तआ़रुफ़

ऐ आशिक़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ! ख़्वाजा का लफ़्ज़ हो सकता है आप बचपन से सुनते आ रहे हों, आइये ! येह भी जानते हैं कि ख़्वाजा के मा’ना क्या हैं ? “ख़्वाजा” फ़ारसी ज़बान का लफ़्ज़ है, इस का लफ़्ज़ी मा’ना है “सरदार”, “आक़ा” । (फ़ीरोज़ुल्लुग़ात, स. 633) आप का मुबारक नाम “ह़सन” है, जब कि अल्क़ाबात बहुत सारे हैं, जिन में एक “मुईनुद्दीन” मश्हूर है, (मुईनुल ह़क़्क़े वद्दीन या’नी ह़क़ और दीन की मदद करने वाले), “अ़त़ाए रसूल”, “सुल्त़ानुल हिन्द”, “ग़रीब नवाज़” वग़ैरा । आप की विलादते बा सआ़दत (या’नी Birth) 14 रजब शरीफ़ 537 हि. मुत़ाबिक़ 1142 ई. में सिजिस्तान या सीस्तान के अ़लाक़े “सन्जर (ईरान)” में और वफ़ात शरीफ़ (या’नी Death) भी रजब शरीफ़ के महीने की 6 तारीख़ 633 हि. को हुई । (करामाते ख़्वाजा, स. 2)

आ़शिक़े क़ुरआन हमारे प्यारे प्यारे ख़्वाजा

हमारे प्यारे प्यारे ख़्वाजा ह़ाफ़िज़े क़ुरआन और आ़शिक़े क़ुरआन थे, आप हर दिन और रात में एक एक बार क़ुरआन ख़त्म किया करते थे और हर ख़त्मे क़ुरआन के बा’द ग़ैब से आवाज़ आती : ऐ मुईनुद्दीन ! मैं ने तेरा ख़त्मे क़ुरआन क़बूल किया । (सियरुल अक़्त़ाब (उर्दू), स. 136)

नज़र तेज़ करने का नुस्ख़ा

हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स क़ुरआने करीम को देखता है **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से उस की बीनाई (या’नी नज़र) बढ़ जाती है, उस की आंख कभी नहीं दुखती और न ख़ुश्क होती है । (معین الارواح، ص214)

www.dawateislami.net

ऐ आ़शिक़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ! हमारे ख़्वाजा, हिन्द के राजा, दो दो बार रोज़ाना पूरा क़ुरआने करीम पढ़ें और हम आ़शिक़ाने ख़्वाजा कहलाने वाले पूरे महीने बल्कि पूरे साल में एक बार भी क़ुरआने करीम ख़त्म न करें ! येह बड़ी अ़जीबो ग़रीब महब्बत है ! काश ! ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के नक़्शे क़दम पर चलते हुए हमें भी रोज़ाना तिलावते क़ुरआने करीम की सआ़दत मिल जाया करे । अगर घर में क़ुरआने करीम की तिलावत होती रहेगी तो **अल्लाह** पाक की रह़मतें उतरती रहेंगी और اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم आफ़तें और बलाएं दूर होंगी । तिलावते क़ुरआने करीम की भी क्या शान है, चुनान्चे

अफ़्ज़ल इबादत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : اَفْضَلُ عِبَادَةِ اُمَّتِیْ قِرَاءَةُ الْقُرْاٰنِ या'नी मेरी उम्मत की अफ़्ज़ल इबादत तिलावते क़ुरआन है ।

(شعب الایمان، 2/354، حدیث:2022)

ऐ आ़शिक़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ! आप ने तिलावते क़ुरआन की फ़ज़ीलत पढ़ी, तिलावते क़ुरआन अफ़्ज़ल तरीन इबादत है और अफ़्सोस ! इस इबादत में भी हमारी बड़ी ग़फ़्लत है । सितम बालाए सितम येह कि हमारी अक्सरिय्यत के बारे में कहा जाए तो शायद ग़लत़ नहीं होगा कि उन्हें देख कर दुरुस्त क़ुरआन पढ़ना नहीं आता । Tenses, Mathematics का इ़ल्म है, दुन्यावी बड़ी बड़ी डिग्रियां हैं और सारी दुन्या पढ़ा लिखा कहती है । अगर इस पढ़े लिखे को देख कर भी क़ुरआन पढ़ना न आए तो येह कहां का पढ़ा लिखा है ? येह कैसा मुसल्मान है कि इस को देख कर भी क़ुरआने करीम पढ़ना नहीं आता ।

क़ाबिले रश्क कौन ?

मैं कभी कभी किसी क़ारी के बारे में ग़ौर करता हूं तो मुझे उस पर रश्क आता है कि येह कैसा ख़ुश नसीब है ! इस को **अल्लाह** पाक का कलाम दुरुस्त त़रीक़े के मुत़ाबिक़ पढ़ना आता है, अरबों खरबों पती एक त़रफ़ और दुरुस्त क़ुरआने करीम पढ़ने वाला एक त़रफ़, येह मेरे दिल के एह़सासात हैं, मुझे क़ुरआने करीम पढ़ने वाला क़ाबिले रश्क लगता है, कुछ न कुछ वक़्त फ़िक्स कर के तिलावत करते रहें, चाहे एक पारह, आधा पारह वरना पाव ही पढ़ लें, रोज़ कुछ न कुछ तिलावत होती रहेगी तो اِنْ شَآءَالله इस की बरकतें मिलती रहेंगी, **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये कोशिश करनी चाहिये । आइये ! ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह में फ़रियाद करते हैं :

रब की इबादत की दुश्वारी और गुनाहों की बीमारी
दोनों आफ़तें दूर हों ख़्वाजा या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 68)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

हुज़ूर ग़ौसे पाक और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

ऐ आशिक़ाने औलिया ! ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन ह़सन सन्जरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नजीबुत्त़रफ़ैन (या'नी ह़सनी हुसैनी सय्यिद) थे ।

मलिकुत्तह़रीर, ह़ज़रते अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : वालिदे मोह़तरम की त़रफ़ से आप का नसब नवासए रसूल, शहीदे करबला ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه और वालिदए मोह़तरमा की त़रफ़ से आप का सिल्सिला जिगर गोशए मुर्तज़ा, नूरे नज़रे फ़ातिमा, ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللهُ عَنْه से जा मिलता है । सरकारे ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की

अम्मीजान हुज़ूर ग़ौसे पाक (शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) की चचाज़ाद बहन हैं, इस रिश्ते से हुज़ूर ग़ौसे पाक ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मामूं होते हैं। (हयाते ख़्वाजए आ'ज़म, स. 69)

या मुईनद्दीन अजमेरी ! करम की भीक दो अज़ पए ग़ौसो रज़ा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

शब्बरो शब्बीर का सदक़ा बलाएं दूर हों ऐ मेरे मुश्किल कुशा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 536)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

करामते ख़्वाजा ब ज़बाने इमाम अह़मद रज़ा

मेरे आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ार से बहुत फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल होते हैं, मौलाना बरकात अह़मद साह़िब मर्ह़ूम जो मेरे पीरभाई और मेरे वालिदे माजिद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के शागिर्द थे उन्हों ने मुझ से बयान किया कि मैं ने अपनी आंखों से देखा कि एक ग़ैर मुस्लिम जिस के सर से पैर तक फोड़े थे, **अल्लाह** ही जानता है कि किस क़दर थे, ठीक दोपहर को आता और दरबार शरीफ़ के सामने गर्म कंकरों और पथ्थरों पर लोटता और कहता : ख्वाजा अगन लगी है (या'नी ऐ ख़्वाजा ! जलन मची है, या'नी बदन में आग लग रही है)। तीसरे रोज़ मैं ने देखा कि बिल्कुल अच्छा हो गया है। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 384)

बिरादरे आ'ला ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में अ़र्ज़ करते हैं :

फिर मुझे अपना दरे पाक दिखा दे प्यारे आंखें पुरनूर हों फिर देख के जल्वा तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 28)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

30 सालह अश्कबारी और नमाज़ का ग़म

हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपनी सियाह़त का तज़्किरा करते हुए फ़रमाते हैं : मैं एक दफ़्आ़ किसी शह्र में गया जो मुल्के शाम के क़रीब था, शह्र के बाहर एक ग़ार थी जिस में एक बुज़ुर्ग शैख़ औह़द मुह़म्मद अल वाह़िद ग़ैरज़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه रहते थे, वोह इतने ज़ईफ़ थे कि जिस्म पर हड्डियां ही हड्डियां थीं, मैं मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुवा तो देखा कि वोह जाए नमाज़ पर बैठे हैं और क़रीब ही दो शेर खड़े हुए हैं, डर के मारे मुझे पास जाने की हिम्मत नहीं हो रही थी, इतने में उन की नज़र मुझ पर पड़ी तो फ़रमाया : डरो नहीं, आ जाओ ! मैं क़रीब गया और सलाम व मुसाफ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाने) के बा'द बैठ गया। उन्हों ने पहली बात मुझ से येह की, कि जब तक तुम किसी चीज़ का इरादा नहीं करोगे वोह भी तुम्हारा इरादा नहीं करेगी, जब तुम्हारे दिल में ख़ुदा का डर होगा तो हर चीज़ तुम से डरेगी, शेर की क्या मजाल कि वोह तुम्हें डरा सके। ख़्वाजा साह़िब फ़रमाते हैं : इस के बा'द मेरा ह़ाल अह़वाल मा'लूम किया और नसीह़त करते हुए फ़रमाया : बुज़ुर्गों की ख़िदमत करते रहो, बुज़ुर्ग बन जाओगे। फिर अपना ह़ाल बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया : मुझे इस ग़ार में रहते हुए कई साल हो गए हैं, मख़्लूक़ से कनारा कश (या'नी गोशा नशीन) हूं और 30 साल से एक ही चीज़ का ग़म मुझे रात दिन रुला रहा है। मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! किस चीज़ का ग़म ? फ़रमाया : "नमाज़ का ग़म।" मज़ीद फ़रमाया : मैं जब भी नमाज़ पढ़ता हूं तो अपने आप को देख कर रोता हूं कि कहीं कोई शर्त मुझ से रह गई तो नमाज़ मेरे मुंह पर मार दी जाएगी और सब कुछ बरबाद हो जाएगा। फिर नसीह़त करते हुए फ़रमाया : अगर तुम ने नमाज़

का ह़क़ अदा कर दिया तो वाक़ेई बहुत बड़ा काम कर लिया, नहीं तो सिर्फ़ उ़म्र ही ज़ाएअ़ की, मेरे बदन पर जो सिर्फ़ हड्डियां और चमड़ा नज़र आ रहा है इस का सबब येही ग़म है कि मुझे नहीं मा'लूम मैं ने आज तक नमाज़ का ह़क़ अदा किया है या नहीं। नमाज़ बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है, जो येह ज़िम्मेदारी पूरी नहीं करेगा वोह क़ियामत में शरमिन्दगी उठाएगा और मुंह दिखाने के लाइक़ नहीं रहेगा। येह वाक़िआ़ बयान करने के बा'द हु़ज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अश्कबार आंखों (या'नी रोती आंखों) के साथ नसीह़त फ़रमाते हैं : "नमाज़ दीन का सुतून है, जब तक सुतून सलामत है, घर सलामत है, जब सुतून गिरेगा तो घर भी गिर जाएगा।" चूंकि इस्लाम व दीन के लिये नमाज़ सुतून की मानन्द है इस लिये अगर नमाज़ में ख़राबी पैदा होगी तो वोह इस्लाम व दीन ख़राब होने का सबब होगी।

(دلیل العارفین، ص11،ملتقطاً و مفہوماً)

नमाज़ इ़ज़्ज़त का सबब है

ऐ आ़शिक़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ! देखा आप ने ! बुज़ुर्गों के नज़्दीक नमाज़ की कितनी अहम्मिय्यत है। दुन्या से कनारा कश हो कर ग़ार में रहने और इतनी इ़बादतो रियाज़त के बा वुजूद नमाज़ के तअ़ल्लुक़ से फ़रमा रहे हैं कि मुझे नमाज़ का ग़म है। हमें तो नमाज़ आती ही कब है ! नमाज़ की शराइत़, नमाज़ के फ़र्ज़ किस को आते हैं ! इस के बा वुजूद हम समझते हैं हम बड़े नमाज़ी और नेक आदमी हैं। परेशान ह़ाल बे नमाज़ी येह कहते सुनाई देते हैं कि न जाने ऐसी क्या ख़त़ा हो गई है, परेशानी ह़ल नहीं होती ! नमाज़ न पढ़ने की बुराई नज़र ही नहीं आती। ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की इर्शादात की मश्हूर किताब "दलीलुल आ़रिफ़ीन" में

है : बन्दा सिर्फ़ नमाज़ से ही क़ाबिले इ़ज़्ज़त हो सकता है। भला बे नमाज़ी भी इ़ज़्ज़त वाला है ! नमाज़ मोमिन की मे'राज है, तमाम मक़ामात से बढ़ कर नमाज़ है, **अल्लाह** पाक से मुलाक़ात का सब से पहला ज़रीआ़ "नमाज़" ही है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीसे पाक में है : नमाज़ी अपने रब्बे करीम से मुनाजात करने वाला है। (مسلم، ص220، حدیث:1230)(دلیل العارفین، ص3)

हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : नमाज़ एक अमानत है जो **अल्लाह** पाक ने अपने बन्दों के ह़वाले की है, लिहाज़ा बन्दों पर लाज़िम है कि वोह इस अमानत में किसी क़िस्म की ख़ियानत न करें।

(دلیل العارفین، ص10)

हर इ़बादत से बरतर इ़बादत नमाज़ सारी दौलत से बढ़ कर है दौलत नमाज़
नारे दोज़ख़ से बेशक बचाएगी येह रब से दिलवाएगी तुम को जन्नत नमाज़
या ख़ुदा तुझ से अ़त्तार की है दुआ़ मुस्त़फ़ा की पढ़े प्यारी उम्मत नमाज़

(वसाइले फ़िरदौस, स. 22, 23)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

मक्के मदीने में नमाज़

अल्लाह पाक हम सब को हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सदक़े नमाज़ी बनाए, देखिये ! नमाज़ के बिग़ैर किसी को दीन में तरक़्क़ी नहीं मिलेगी अगर्चे दुन्या की ज़ाहिरी तरक़्क़ी मिल जाए लेकिन दीन में तरक़्क़ी नमाज़ ही से है, नमाज़ किसी को मुआ़फ़ नहीं, हम पर पांच और हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर छे नमाज़ें फ़र्ज़ थीं, जी हां ! हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर तहज्जुद भी फ़र्ज़ थी। (تفسیر قرطبی، پ30، المزمل، تحت الآیہ:2، 10/29) आप ने कभी नमाज़ नहीं छोड़ी, सारे सह़ाबा नमाज़ी, सारे औलिया नमाज़ी,

कोई भी वली बे नमाज़ी नहीं हो सकता। अब कोई नमाज़ न पढ़ता हो या नमाज़ के टाइम पे बैठा गपें मारता हो या वैसे बैठा हो और पहुंचा हुवा हो कि भाई येह कभी मक्के में, कभी मदीने में नमाज़ पढ़ता है और मुरीदों से पूछो तो कहते हैं : पीर साहिब सर झुकाते हैं नमाज़ पढ़ लेते हैं हमें नज़र नहीं आता, हमें ऐसे पीरों की गली से भी नहीं गुज़रना।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नमाज़ छोड़ने का अ़ज़ाब

जो जान बूझ कर एक नमाज़ तर्क करता (छोड़ता) है तो जहन्नम का एक मख़्सूस दरवाज़ा है जिस पर नमाज़ छोड़ने वाले का नाम लिख दिया जाता है जिस से दाख़िल हो कर वोह जहन्नम में दाख़िल होगा। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो जान बूझ कर एक नमाज़ क़ज़ा कर दे तो वोह हज़ारों साल जहन्नम के अ़ज़ाब का ह़क़दार है, जब तक तौबा न करे और उस की क़ज़ा न कर ले। (फ़तावा रज़विय्या, 9/158) नमाज़ छोड़ना कबीरा गुनाह है लेकिन अफ़्सोस कि आज जो नमाज़ नहीं पढ़ता बड़ा इ़ज़्ज़त वाला बना हुवा है, दुन्या उस का बड़ा एह़तिराम करती और आंखों पे बिठाती है, ह़ालां कि

روزِ محشر کہ جاں گُداز بُوَدْ اَوّلیں پُرسشِ نماز بُوَدْ

या'नी क़ियामत के दिन जान घुलाने वाली शदीद गरमी होगी उस वक़्त सब से पहले नमाज़ के बारे में पूछा जाएगा

और जिस की नमाज़ दुरुस्त न हुई उस के आगे के मुआ़मलात और ज़ियादा ख़राब होंगे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

पहले नमाज़ी फिर नियाज़ी

ऐ आ़शिक़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ! नमाज़ के बिग़ैर चारा नहीं, आप लाख नियाज़ करें, हर साल छटी शरीफ़ की छे हज़ार, ग्यारहवीं शरीफ़ की ग्यारह हज़ार देगें चढ़ाएं, लेकिन नमाज़ नहीं पढ़ेंगे तो ख़लासी मुश्किल है, ग़रीबों, बेवाओं की मदद करें, ग़रीबों को कारोबार पे लगाएं लेकिन नमाज़ नहीं पढ़ते तो बचत मुश्किल है। मैं बरसों से कहता हूं "मैं नमाज़ी भी हूं नियाज़ी भी हूं" पहले नमाज़ी हूं बा'द में नियाज़ी।[1] नमाज़ फ़र्ज़ है और नियाज़ मुस्तह़ब। नियाज़ भी नहीं छोड़ेंगे कि येह अहले सुन्नत के मा'मूलात में से है, हमें दोनों को साथ ले कर चलना है, नमाज़ पढ़ेंगे और नमाज़ के सदक़े में नियाज़ भी क़बूल हो जाएगी اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم। **अल्लाह** पाक हम सब को नमाज़ी बनाए और गुनाहों से बचा कर बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर चलाए और हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सदक़े में अपनी पसन्द का बन्दा बना ले।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नमाज़, रोज़ा नहीं छोड़ूंगा

ऐ आ़शिक़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ! सब निय्यत करें कि आज के बा'द मेरी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी, रमज़ान शरीफ़ का कोई रोज़ा क़ज़ा नहीं होगा اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم। مَعَاذَالله अब तक जितनी नमाज़ें क़ज़ा हुई हैं सब का हिसाब लगा कर उन को अदा कर लें क्यूं कि तौबा करने से पिछली नमाज़ें मुआ़फ़ नहीं होतीं जब तक उन को अदा नहीं कर लेते। ख़ुदा

1... वैसे नियाज़ी एक क़बीला भी है और Surname भी। यहां नियाज़ी से मुराद बुज़ुर्गों की नियाज़ करने और खाने वाला है।

न ख़्वास्ता रमज़ान के रोज़े क़ज़ा हुए हों तो जितना जल्दी हो सके वोह भी रख लें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

गुनाह का इज़्हार

अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता किसी पर नमाज़ या रोज़े क़ज़ा हैं तो किसी को न बताएं क्यूं कि बिला इजाज़ते शर्ई गुनाह का इज़्हार भी गुनाह है, बा'ज़ नादान बेबाकी के साथ सब के सामने बोलते फिरते हैं कि मैं ने फ़ुलां गुनाह किया, मैं पहले चोर या डाकू था वग़ैरा ऐसा नहीं बोलना चाहिये, अलबत्ता ज़रूरतन दूसरों को तरग़ीब देने के लिये बताना कि मैं तो दुन्यादार और नेकियों से दूर था, **अल्लाह** दा'वते इस्लामी वालों का भला करे येह मुझे राहे रास्त पर ले आए, लिहाज़ा आप भी दा'वते इस्लामी में आ जाएं वग़ैरा, इस त़रह़ तरग़ीब देने के लिये कहने में ह़रज नहीं है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

यहां अमीरे अहले सुन्नत का बयान ख़त्म हुवा इस से आगे का मवाद "मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत" से लिया गया है

ख़्वाजा साहि़ब के उ़र्स में शिर्कत करने की निय्यतें

❀ पहले तो येह निय्यत कर लें कि हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ (सय्यिद मुईनुद्दीन ह़सन सन्जरी अजमेरी) رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ की बारगाह में और जितने आप के क़दमों में आराम फ़रमा हैं उन सब आ़शिक़ाने ख़्वाजा को इल्यास क़ादिरी का सलाम अ़र्ज़ करूंगा। ❀ मज़ीद येह निय्यत कर लें कि औलियाए किराम رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہِم की सोह़बत इख़्तियार करूंगा, क्यूं कि

یک زمانہ صحبتِ باأولیا   بہتر از صد سالہ طاعتِ بے ریا

या'नी औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की लम्हा भर की सोहबत 100 साल की ख़ालिस इबादत से बढ़ कर है। ❀ येह भी निय्यत करें कि औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की बरकतें हासिल करूंगा ❀ वहां दुआ मांगूंगा कि **अल्लाह** के नेक बन्दों के क़रीब हो कर दुआ करना क़बूलिय्यत के भी क़रीब होता है। ❀ वहां ईसाले सवाब करूंगा ❀ मुसल्मानों से मिलूंगा ❀ अगर वहां हाज़िरी का कोई ग़लत तरीक़ा देखूं तो फ़ितने का ख़ौफ़ न होने की सूरत में समझाऊंगा। वहां दा'वते इस्लामी वाले भी बहुत होते हैं और मदनी क़ाफ़िले भी ठहरते हैं तो ❀ येह भी निय्यत कर लें कि मदनी क़ाफ़िले वालों के साथ अपना वक़्त गुज़ारूंगा। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/192)

ग़रीब नवाज़ का मा'ना क्या है ?

सुवाल : ग़रीब नवाज़ के क्या मा'ना हैं ?

जवाब : "ग़रीब नवाज़" का मा'ना है : ग़रीबों को नवाज़ने वाला, ग़रीबों पर सख़ावतों के दरवाज़े खोलने वाला और उन की झोलियां भरने वाला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हमारे ख़्वाजए ख़्वाजगान ग़रीबों को नवाज़ने वाले और सख़ावतों से मालामाल करने वाले हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/229)

विसाले ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

सुवाल : ख़्वाजा ग़रीब नमाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कितनी उम्र में विसाल फ़रमाया था ?

जवाब : हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का विसाले बा कमाल तक़रीबन 96 साल की उम्र में हुवा था। (**अल्लाह** के ख़ास बन्दे अ़ब्दुह, स. 507)

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का अपने मुर्शिद के मज़ार का अदब

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के रिसाले "फ़ैज़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़" के सफ़हा नम्बर 16 पर येह वाक़िआ है कि एक मरतबा

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने मुरीदीन को मल्फ़ूज़ात से नवाज़ रहे थे। दौराने गुफ़्तगू एक त़रफ़ रुख़ कर के आप बार बार खड़े हो जाते कि बुज़ुर्गों की बसा अवक़ात अपनी एक कैफ़िय्यत होती है। मुरीदीन में से किसी और की हिम्मत न हुई कि इस की वज्ह मा'लूम कर सके, लेकिन एक मन्ज़ूरे नज़र मुरीद ने पूछ लिया कि बार बार खड़े होने की वज्ह बयान फ़रमा दीजिये ताकि हमारी तअ़ज्जुब की कैफ़िय्यत दूर हो सके। ख़्वाजा साहिब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया कि मेरे पीरो मुर्शिद ह़ज़रते शैख़ उ़स्मान हर्वनी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का मज़ारे मुबारक इस त़रफ़ है। पस दौराने गुफ़्तगू जब मुझे याद आ जाता था तो मैं उस की त़रफ़ रुख़ कर लेता था और अदबो ता'ज़ीम की वज्ह से खड़ा हो जाता था। (फ़वाइदुस्सालिकीन मअ़ हिश्त बिहिश्त, स. 138)

ख़्वाजा साहिब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पीर साहिब का नाम ह़ज़रते शैख़ उ़स्मान हर्वनी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه है, बा'ज़ लोग इसे हरूनी या हारूनी पढ़ते हैं लेकिन अस्ल में हर्वनी है। इन का मज़ारे मुबारक मक्कए मुकर्रमा के मुक़द्दस क़ब्रिस्तान जन्नतुल मा'ला में है। ख़्वाजा साहिब इतने दूर होने के बा वुजूद भी अपने पीर साहिब के मज़ार का एह़तिराम करते थे। बहर ह़ाल येह अदबो एह़तिराम के ऐसे वाक़िआ़त हैं जो हर एक नहीं कर पाता और जिन्हों ने किये उन पर कोई ए'तिराज़ भी नहीं हो सकता क्यूं कि ऐसा अदबो एह़तिराम जो शरीअ़त के किसी उसूल के ख़िलाफ़ न हो, शरीअ़त की किसी मुमानअ़त के तह़्त दाख़िल न होता हो, जाइज़ है। शरीअ़त ने इन से मन्अ़ नहीं किया और लोग अ़क़ीदतो मह़ब्बत के इज़्हार के लिये शरीअ़त के दाएरे में रह कर अपने अपने अन्दाज़ में जो कुछ करते हैं तो उन को ग़लत़ कहने वाले ख़ुद ग़लती पर हैं। इन बातों का सुबूत मांगने से पहले सोचना चाहिये कि कई

ऐसी बातें हैं जिन की क़ुरआनो ह़दीस में सराह़त नहीं मिलती लेकिन सब ही उन्हें कर रहे हैं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/191)

ख़्वाजए ख़्वाजगां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
क़िब्लए आ़रिफ़ां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
सय्यिदे ज़ाहिदां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
ज़ीनते आ़रिफ़ां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
मुर्शिदे नाक़िसां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
रहबरे कामिलां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
हादिये गुम्रहां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
मुस्लिहे आ़सियां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
ह़ामिये बे कसां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
हैं कसे बे कसां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
ऐ शहे सालिह़ां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़
हम पे हों मेह्रबां ! ग़रीब नवाज़, ग़रीब नवाज़

(वसाइले फ़िरदौस, स. 62)

फ़ेहरिस्त

ज़ालिम बादशाह	1	नमाज़ इ़ज़्ज़त का सबब है	8
"ख़्वाजा" के मा'ना और तआ़रुफ़	3	मक्के मदीने में नमाज़	9
आ़शिक़े क़ुरआन हमारे प्यारे प्यारे ख़्वाजा	3	नमाज़ छोड़ने का अ़ज़ाब	10
		पहले नमाज़ी फिर नियाज़ी	11
नज़र तेज़ करने का नुस्ख़ा	3	नमाज़, रोज़ा नहीं छोड़ूंगा	11
अफ़्ज़ल इ़बादत	4	गुनाह का इ़ज़्हार	12
क़ाबिले रश्क कौन ?	5	ख़्वाजा साह़िब के उ़र्स में शिर्कत करने की निय्यतें	12
ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़	5		
करामते ख़्वाजा ब ज़बाने इमाम अह़मद रज़ा	6	ग़रीब नवाज़ का मा'ना क्या ?	13
		विसाले ख़्वाजा ग़रीब नवाज़	13
30 सालह अश्कबारी और नमाज़ का ग़म	7	ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का अपने मुर्शिद के मज़ार का अदब	13

अगले हफ़्ते का रिसाला